



॥ श्री कृष्ण जन्म कथा ॥
श्रीकृष्णार्पणमस्तु

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री कृष्ण जन्म कथा ॥

श्री कृष्ण जन्म कथा

भगवान श्रीकृष्ण भगवान विष्णु के आठवें अवतार माने जाते हैं। उनका अवतार धर्म की रक्षा, अधर्म के विनाश तथा भक्तों के कल्याण के लिए हुआ। श्रीकृष्ण का जन्म केवल एक ऐतिहासिक या धार्मिक घटना नहीं, बल्कि सत्य, धर्म, प्रेम और ईश्वर की कृपा का दिव्य संदेश माना जाता है। उनकी जन्म कथा का वर्णन मुख्य रूप से श्रीमद्भागवत महापुराण, विष्णु पुराण तथा अन्य वैष्णव ग्रंथों में मिलता है।

पृथ्वी का भार और देवताओं की प्रार्थना

प्राचीन समय में पृथ्वी पर अत्याचार, अधर्म और दुष्ट शक्तियों का प्रभाव बढ़ गया था। अनेक अत्याचारी राजा और राक्षस निर्दोष लोगों को कष्ट पहुँचा रहे थे। पृथ्वी ने गौ का रूप धारण कर भगवान ब्रह्मा से सहायता की प्रार्थना की। तब ब्रह्मा सहित सभी देवता भगवान विष्णु की शरण में पहुँचे। भगवान विष्णु ने आश्वासन दिया कि वे पृथ्वी पर अवतार लेकर धर्म की पुनः स्थापना करेंगे और अधर्म का अंत करेंगे। इसी संकल्प के अनुसार भगवान ने श्रीकृष्ण के रूप में अवतार लेने का निर्णय किया।

कंस का अत्याचार

मथुरा का राजा उग्रसेन था, किन्तु उसका पुत्र कंस अत्यंत क्रूर और अहंकारी था। अपनी शक्ति के बल पर उसने राज्य पर अधिकार कर लिया और प्रजा पर अत्याचार करने लगा। जब कंस अपनी बहन देवकी का विवाह वसुदेव के साथ सम्पन्न कराकर उन्हें विदा कर रहा था, तभी आकाशवाणी हुई—
"हे कंस! देवकी का आठवाँ पुत्र ही तुम्हारे वध का कारण बनेगा।"

यह सुनते ही कंस भयभीत हो गया। उसने देवकी को मारने का प्रयास किया, लेकिन वसुदेव ने वचन दिया कि देवकी से उत्पन्न प्रत्येक संतान उसे सौंप देंगे। इसके बाद कंस ने देवकी और वसुदेव को कारागार में बंद कर दिया।

छह पुत्रों का वध

देवकी के पहले छह पुत्रों का जन्म होते ही कंस ने उन्हें निर्दयता से मार डाला। सातवें गर्भ में भगवान के अंश स्वरूप बलराम थे। भगवान की योगमाया ने उस गर्भ को देवकी से रोहिणी के गर्भ में स्थानांतरित कर दिया। इसलिए बलराम का जन्म गोकुल में हुआ।

भगवान श्रीकृष्ण का दिव्य जन्म

समय आने पर भाद्रपद मास के कृष्ण पक्ष की अष्टमी तिथि, रोहिणी नक्षत्र तथा मध्यरात्रि के शुभ मुहूर्त में भगवान श्रीकृष्ण ने कारागार में जन्म लिया।

जन्म के समय चारों ओर दिव्य प्रकाश फैल गया। भगवान ने अपने चतुर्भुज दिव्य स्वरूप में दर्शन दिए। उनके हाथों में शंख, चक्र, गदा और पद्म सुशोभित थे। उन्होंने वसुदेव और देवकी को आश्वस्त किया तथा आदेश दिया कि वे उन्हें गोकुल में नंद और यशोदा के घर ले जाएँ और वहाँ जन्मी कन्या को वापस कारागार ले आएँ।

वसुदेव का गोकुल जाना

भगवान की योगमाया से कारागार के सभी द्वार अपने आप खुल गए और पहरेदार गहरी निद्रा में सो गए। वसुदेव श्रीकृष्ण को टोकरी में रखकर गोकुल की ओर चल पड़े।

रास्ते में यमुना नदी उफान पर थी, लेकिन भगवान की कृपा से यमुना ने मार्ग दे दिया। यात्रा के दौरान शेषनाग ने अपने फनों से भगवान श्रीकृष्ण की रक्षा करते हुए वर्षा से उन्हें सुरक्षित रखा।

यशोदा के यहाँ बालक का आगमन

उसी रात नंद बाबा की पत्नी यशोदा ने एक कन्या को जन्म दिया था। वसुदेव ने भगवान श्रीकृष्ण को वहाँ सुला दिया और कन्या को लेकर पुनः मथुरा लौट आए। जैसे ही वे कारागार पहुँचे, सभी द्वार पुनः बंद हो गए और पहरेदार जाग उठे।

योगमाया का प्रकट होना

कंस को कन्या के जन्म का समाचार मिला। उसने उस कन्या को भी मारने का प्रयास किया, लेकिन वह उसके हाथों से छूटकर आकाश में प्रकट हुई और देवी के रूप में बोली—
"हे कंस! तेरा वध करने वाला जन्म ले चुका है और सुरक्षित स्थान पर पहुँच गया है।"
यह सुनकर कंस और अधिक भयभीत हो गया और उसने श्रीकृष्ण को खोजने के अनेक प्रयास किए, किन्तु भगवान अपनी दिव्य लीलाओं से सदैव सुरक्षित रहे।

गोकुल में बाल लीलाएँ

गोकुल में नंद बाबा और माता यशोदा ने श्रीकृष्ण का पालन-पोषण किया। बाल्यकाल में उन्होंने अनेक अद्भुत लीलाएँ कीं। उन्होंने पूतना, शकटासुर, तृणावर्त, वत्सासुर, बकासुर और अघासुर जैसे दुष्ट असुरों का संहार किया। उन्होंने माखन-चोरी की मधुर लीलाओं, गोचारण, कालिय नाग के दमन और गोवर्धन पर्वत धारण जैसी दिव्य घटनाओं के माध्यम से भक्तों को प्रेम, विश्वास और ईश्वर की करुणा का संदेश दिया।

जन्म कथा का आध्यात्मिक संदेश

श्रीकृष्ण जन्म कथा हमें सिखाती है कि जब संसार में अधर्म बढ़ता है, तब ईश्वर किसी न किसी रूप में धर्म की रक्षा के लिए अवश्य प्रकट होते हैं। भगवान श्रीकृष्ण का जन्म सत्य की असत्य पर, धर्म की अधर्म पर और प्रकाश की अंधकार पर विजय का प्रतीक है।

यह कथा यह भी प्रेरणा देती है कि कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी श्रद्धा, धैर्य, विश्वास और ईश्वर-भक्ति बनाए रखनी चाहिए। भगवान अपने भक्तों की रक्षा करते हैं और उचित समय पर उनका मार्गदर्शन करते हैं।

निष्कर्ष

भगवान श्रीकृष्ण की जन्म कथा भारतीय संस्कृति और सनातन परंपरा की अमूल्य धरोहर है। यह केवल एक धार्मिक कथा नहीं, बल्कि जीवन को प्रेम, करुणा, कर्तव्य, सत्य और धर्म के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देने वाला दिव्य संदेश है। श्रद्धा और भक्ति के साथ श्रीकृष्ण जन्म कथा का श्रवण एवं मनन करने से मन में शांति, विश्वास और भगवान के प्रति अटूट भक्ति का भाव जागृत होता है।

॥ जय श्रीकृष्ण ॥